IJCRT.ORG ISSN : 2320-2882

INTERNATIONAL JOURNAL OF CREATIVE RESEARCH THOUGHTS (IJCRT)

An International Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

भारतीय साहित्य में दर्शन एवं जन मानस पर प्रभाव

डॉ. नीलिमा दुबे

न्यु होराईजिन कॉलेज,बैंगलुरु

भारतीय साहित्य को परिभाषित करते हुए डॉ. नगेन्द्र ने लिखा है कि "भारतीय मनीषा की अभिव्यक्ति का नाम भारतीय साहित्य है,और भारतीय मनीषा का अर्थ है भारत के प्रबुद्ध मानस की सामूहिक चेतना- सदियों से संचित अनुभूतियों और विचारों के नवनीत से जिनका निर्माण हुआ। यह भारतीय मनीषा ही भारतीय संस्कृति, भारत की राष्ट्रीयता और साहित्य का प्राण तत्व है।"---(भारतीय साहित्य का समेकित इतिहास, डॉ. नगेन्द्र, पृ.10)

इस व्यापक परिभाषा में नगेन्द्र जी ने सामूहिक चेतना को ही भारतीय साहित्य माना है। लेकिन भौगोलिक एक्त्व के आधार पर विन्टरनिप्स ने अपनी पुस्तक "भारतीय साहित्य इतिहास भाषाओं के माध्यम से अभिव्यिक्त तीन हजार साल के मानसिक क्रिया कलाप का लिपि बद्ध इतिहास है। जो हिन्दूकुश पर्वत से कुमारी अंतरीप लगभग डेढलाख वर्गमील तक फ़ैला है, जिसका क्षेत्रफ़ल रुस को छोडकर समस्त युरोप के बराबर है।"

यहां ये धयान रखना आवश्यक है जब हम भारतीय साहित्य की बात करते है, तो यह भारतीय भाषाओं के साहित्य का पर्याय ही है।

विषयवस्तु की दृष्टि से इसमें व्यापक अर्थ में साहित्य सभी रुप में विद्यमान है। धर्मिक और लौकिक महाकाव्य,प्रगीत काव्य,नाटक,नीतिकाव्य तथा गद्य में कथा-आख्यायिका,उपन्यास आदि हर विधा में इसके उदाहरण मौजूद हैं। भारत अनेक भाषाओं वाला देश है। उत्तर पश्चिम में पंजाबी, हिन्दी, उर्दू-पूर्व में आसमिया, बंगला उडीया – मध्य पश्चिम में मराठी व गुजराती-दक्षिण में कन्नड तमिल तेलगू और मलयालम।

इनके अलावा भी कई भाषाएं है जिनका महत्व भाषा विज्ञान की दृष्टि से कम नहीं जैसे कश्मीरी,सिहली, डोंगरी, कोंकणी, तूरु आदि।

भोलानाथ तिवारी ने क्षेत्रिय तथा संबंध अपभ्रंशो के आधार पर वर्गीकरण जो किया है वह देखने योग्य है। इससे मालूम होता है कि भारतीय भाषा परिवार कितना व्यापक और संवृद्ध है।

1	उत्तरी क्षेत्र की भाषाएं	कश्मीरी, सिन्धी, पहाडी, गडवाली, कूमायूनी,नेपाली
2	पश्चिम क्षेत्र की भाषाएं	पंजाबी, हरियाणी, राजस्थानी ,गुजराती
3	दक्षिण – पश्चिम	मराठी
4	दक्षिण क्षेत्र	तेलगू, तमिल, कन्नड, मलयालम
5	पूर्वी क्षेत्र	बंगला,असमिया,उडिया
6	पूर्वोत्तर की भाषाएं	नागालैंड, मिजोरम, मेघलयी, अरुणाचली

भारतीय साहित्य की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि 1000 ईसा पूर्व मानी जाती है। विन्टरनित्स ने अपनी पुस्तक में लिखा हैकि महाकव्य कालीन सभ्यता से पूर्व वेदों की रचना हो चुकी थी। इसका स्वरुप कुछ ऐसा है-

मैक्समुलर – 1200 ई.पू.

जैकोबी – 4500 ई. पू .

बाल गंगाधर तिलक – सृष्टि के आरंभिक युग में

पं. दीनानाथ शास्त्री – 3 लाख वर्ष पूर्व

अविनाश चंद्र दास – 25,000 वर्ष पूर्व

आदि शंकराचार्य – सृष्टि के आरंभिक चरण

व्यास – सृष्टि के आरंभिक चरण

इन तमाम भारतीय भाषाओं में साहित्य द्वारा जो स्वर मुखर हुआ वह तो सभी जानते हैं। लेकिन साहित्य के मूल में जो दर्शन है , वही भारतीयता की पहचान है।दर्शन यानि उद्देश्यपूर्ण जीवन शैली का आधार, जिसमें व्यक्तिगत रुप से उन गुणों, सिद्धान्तों और अनुशासन का समावेश होता है जो मनुष्य को अन्य प्रणीयों से श्रेष्ठ व सर्वोत्तम बनाने में सहायक है।

भाषा जीवी मानव ने साहित्य का समायोजन किया । कहा गया है कि "सहिते ते साहित्य" अर्थात ऐसी लेखनी जो किसी न किसी हित (उद्देश्य) को पूरा करती हो साहित्य कहलाती है। हमारे देश के किसी भी साहित्य ग्रंथों को उठाकर देख लो उसमें जीने की कला को दर्शाया गया है इसलिए वह काल से परे बन पडा है।

विहंगम दृष्टि डालने से मालूम होता है कि प्रत्येक भाषा का विभाजन एक जैसा है। आदिकाल,मध्यकाल,आधुनिक काल आदि। अपने आलेख में सभी भाषाओं के साहित्यकारों को शामिल करना तो संभव नही है, परंतु कुछ की चर्चा अवश्य कर सकते हैं।

आदिशंकराचार्य ने समूचे भारत को वेदांत के एक सूत्र में बांधा। 12 वी सदी के तमिल संत तिरुवर ने जो समाज को दिया वही कश्मीर के नलदल अपने उपदेशों में कहा।

अकबर बीरबल की तरह तेनाली रामकृष्णा एवं कृष्णदेव राय की कहानियां तेलगू साहित्य में प्रसिद्ध इनकी कृति 'पांडुरंग महत्म्यमु' मानी जाती है।महाराष्ट्र के बारकरी संप्रदाय विष्णु को पांडुरंग के रुप में ही पूजते हैं। मोल्ल नामक कवयित्री कुभार परिवार में जन्मी लेकिन रामायण को अति संक्षिप्त प्रबंध में प्रस्तुत कर इन्होंने दुर्लभ प्रतिभा का परिचय दिया।

यक्षगान- यक्ष का अपभ्रंश ज्क्कु। ये दृश्य काव्य के रुप में प्रचीन समय से ही मिलता है। लिखित रुप में कवि रुद्रय द्वारा सुग्रीव विजय का उल्लेख मिलता है।

12 वीं शताब्दी के उत्तरार्ध में कर्नाटक में बसवेश्वर का प्रादुर्भाव हुआ।जो वीर शैवमत के अनुयायी थे। इन्हें कर्नाटक के सामाजिक और धार्मिक जीवन में बडे बदलाव करने के लिए जाना जाता है। इन्होंने भक्ति वैराग्य ,नीति,सदचार,और सामाजिक आडंबर पर अपने अनुभव की कलम चलाई, जो "बचन" साहित्य के नाम से प्रसिद्ध हुई। इन शिव शरणों ने वैसी ही क्रंति पैदाकर दी जैसी उत्तर भारत में कबीर और उनके अनुयायीयों ने कर दी थी।

13 वीं शताब्दी के हरिदासों के गीत का प्रभाव सामान्य जनता पर आसानी से देखा जा सकता है। कनकदास ,पुरम्दरदास आदि के योगदानो जन मानस पर प्रभाव सर्वविदित है। इसी प्रकार आधुनिक काल का भी इतिहास है कि साहित्य जन परिष्कार का साधन बना।

निष्कर्ष के रुप मे कहा जा सकता है कि –

-ये भारतीय भाषाओं के द्वारा दिये गये संस्कार ही है कि इतनी विविधताओं के बीच भारतीय भावत्मक एकता में बंधा हुआ पाते हैं।

- वैचारिक मतभेद होने पर भी उसके आचरण में लोक कल्याण ही दिखाई देता है।

- शिक्षा का उद्देश्य केवल पैसा कमाना नहीं बल्की मानवता के साथ कदम से कदम मिला कर चलना है।

- ये हमारा भारतीय साहित्य ही है जो बताता है कि जीवन का अंतिम उद्देशय लौकिक संसार को प्राप्त नहीं वरन सहजता से संतुष्ट जीवन जीना और जीने देना ही हमारा लक्ष्य होना चाहिये।